पद ३११

(राग: झिंजोटी - ताल: दीपचंदी)

आज आहे जीव आतां आहे मढें। मज पाहुनी येतसे रडे।।ध्रु.।। नाक नीट डोळे भुवई कमानी। रूप सुंदर रोकडें।।१।। जोंवरि जीव तोंवरी ममता। जीव गेल्या होतो जड।।२।। सुंदर तनु हे नेउनि जाळिती। दिसेना तीं चर्म हाडें।।३।। माणिक म्हणे हरिभजनालागीं। करि सख्या गडबड।।४।।